Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 08, Aug- 2024
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ग्रामीण भारत में नेतृत्व के उभरते प्रतिमान

डा0 जितेन्द्र बैठा
शोधार्थी ,राजनीति शास्त्र,
(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा बिहार)

सारांश

राजनीति से राष्ट्र के भाग्य का निर्धारण होता है और इसके निर्धारक हमारे नेता होते है। इसलिए नेता के चरित्र और ज्ञान की छाप राष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक संस्थाओं पर पड़ती है और उनके त्याग, संघर्ष, संवेदना और साहस आदि का परावर्तन भी इस संस्थाओं से होता है। भारत भी विश्व के अन्य देशों की भाँति एक लम्बी प्रक्रिया के पश्चात् राष्ट्र का स्वरूप ग्रहण कर सका है और इस निर्णयकारी प्रक्रिया में उसे अनेक योग्य नेताओं का पथ प्रदर्शन, सहयोग और सानिध्य मिला है। लेकिन आज भारतीय राजनीति में कोई ऐसा नेता और राजनीतिक दल नहीं है जो क्षेत्र, भाषा, जाति, धम आदि संकीर्णताओं से उपर उठकर राष्ट्रीय नेतृत्व कर सके, नेतृत्व जो समाज को दिशा प्रदान करता है वह अपने कर्तव्यों से विमुख हो रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक का इतिहास इस तथ्य का स्पष्ट प्रमाण है कि जिस समाज एवं राष्ट्र को उचित नेतृत्व प्राप्त हुआ, व प्रगतिशील एवं उन्नतिशील होते रहे है और जिस समाज या राष्ट्र को उचित नेतृत्व नहीं मिल सका उसका पतन होता गया है। सिकन्दर ने कुशल नेतृत्व के सहारे ही आधी से अधिक दुनिया को परास्त किया था तथा महात्मा गाँधी के कुशल नेतृत्व के कारण ही भारत गुलामी की जंजोरों से मुक्त हो सका है और स्वतंत्र भारत में पंडित नेहरू, श्रीमती गाँधी के कुशल नेतृत्व में भारत में अपना अधिक से अधिक विकास किया और उन्होंने अपनी लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष एवं रचनात्मक प्रवृतियों तथा निःस्वार्थता से स्वयं तथा कांग्रेस को राष्ट्रीय नेतृत्व कारी संस्था के रूप में स्थापित किया, लेकिन श्री राजीव गाँधी की मृत्यु के बाद कांग्रेस का राष्ट्रीय जनाधार समाप्त सा ही हो गया हो।

कूट– शब्द – राजनीति, ग्रामीण नेतृत्व ,शक्ति संरचना ,प्रभाव और प्रभुत्व ,वंशानुगत, ग्राम विकास ,पुरूष–प्रधान, लोकतांत्रिक आदि।

प्रस्तावना

समाज की शक्ति संरचना में नेतृत्व का प्रमुख स्थान है। नेता राजनैतिक संगठनों और शक्ति संरचना को जीवन, दिशा और प्रवाह प्रदान करते है। नेतृत्व के अध्ययन के बिना हम राजनैतिक संगठनों और संरचनाओं की प्रकार्य प्रणाली, नहीं समझ सकते। नेता की योग्यता व क्षमता पर शक्ति का सदुपयोग और दुरूपयोग निर्भर करता है। जे0बी0 चिताम्बर का मत है कि प्रत्येक समाज की शक्ति संरचना में कुछ ऐसे व्यक्ति होते है जो लोगों को प्रोत्साहित करते है, प्रेरणा देते है, मार्ग दर्शन करते है अथवा लोगों को क्रिया करने के लिए प्रभावित करते ह। नेतृत्व एक सार्वभौमिक एवं विश्वव्यापी घटना है। जहाँ भी जीवन है वहाँ समाज है और जहाँ भी समाज ह वहाँ नेतृत्व है। व्यक्ति की प्रतिभा और सामाजिक परिस्थितियाँ मानव में नेतृत्व के भाव जागृत करती है। प्रभाव और प्रभुत्व ने भी नेतृत्व को जन्म दिया है।

गाँवों के संदर्भ में भारत के विभिन्न भागों में बसे अनेक गाँवों का विद्वानों ने अध्ययन किया है। पार्क एवं टिट द्वारा सम्पादित पुस्तक "Leadership and Political Institutions in India." एल.पी. विद्यार्थी द्वारा सम्पादित पुस्तक .Leadership in India, दुबे द्वारा लिखित Emerging Patterns of Rural Leadership in Southern Asia, आदि महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं, जिनमें नेतृत्व के विभिन्न पक्षों का

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 08, Aug- 2024
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उल्लेख किया गया है, जैसे नेतृत्व के नये प्रतिमानों, नेताओं की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, गाँवों में नेताओं की भूमिका, आदि।

ग्रामीण भारत में नेतृत्व के उभरते प्रतिमान

वर्त्तमान में लोकतंत्रात्मक नेतृत्व का प्रादुर्भाव हो गया है। गाँवों में अब नेतृत्व वंशानुगत नहीं रह गया है। पहले गाँवों में पंचायत के मुखिया लम्बरदार और पटेल आदि के पद वंश परम्परा के आधार पर होते थे। ये पद पिता से पुत्र को हस्तांतरित होते थे। किन्तु प्रदत्त नेतृत्व के स्थान पर अर्जित नेतृत्व का महत्व बढ़ता जा रहा है। वर्त्तमान में गाँवों में लोकतांत्रिक नेतृत्व का विकास हो रहा है। गाँवों में नेतृत्व प्रदान करने वाले पंचों और सरपंचों का चुनाव लोकतांत्रिक पद्धति द्वारा होता है। नेता वहीं होते है जिन्हें गाँव क अधिकांश व्यक्ति चाहते हैं, वंशानुगत नेताओं की तरह अब ग्रामीणों पर नेतृत्व थोपा नहीं जाता है।

हाल के वर्षो में ग्रामीण नेतृत्व में खासकर युवाओं की सक्रिय सहभागी बढ़ती नजर आ रही है। ग्रामीण नेतृत्व में अधिक आयु का महत्व घटा है। पहले यह आवश्यक था कि गाँव का नेता वयोवृद्ध पुरूष ही हो, क्योंकि उनकी धारणा थी कि आयु के साथ व्यक्ति में परिपक्वता आती है, किन्तु अब ग्रामीण नेतृत्व युवा लोगों के हाथों में आ रहा है। ये युवा नेता पुराने नेताओं की अपेक्षा अधिक क्रियाशील, विचारों में उदार, लौकिक दृष्टिकोण से ओत–प्रोत तथा परिवर्तन को स्वीकार करने वाले है। इनमें रूढ़िवादिता एवं कठोरता न होने के कारण ही ये ग्राम विकास की नयी योजनाओं के वाहक है।

उल्लेखनीय है कि ग्रामीण नेतृत्व में उच्च जाति का महत्व घटा है। चूँकि पहले नेतृत्व प्रदत्त था, अतः उच्च जातियों के व्यक्ति ही सम्पूर्ण गाँव के नेता होते थे, किन्तु बदली हुई परिस्थितियों में निम्न जातियाँ भी नेतृत्व के क्षेत्र में आगे आयी ह। वयस्क मताधिकार के कारण अस्पृश्य और निम्न जातियाँ अपनी अधिक संख्या का लाभ उठाकर औपचारिक नेतृत्व के पदों को हथिया रही है। गाँव में पभावपूर्ण नेतृत्व के लिए यह आवश्यक है कि नेता वहाँ की बहुसंख्यक जाति का हो। इस प्रकार उच्च जाति का प्रभुत्व कम होता जा रहा है और निम्न जातियाँ शक्तिशाली हो रही है। सरकार द्वारा जातियों के लिए नयी राजनैतिक व्यवस्था में स्थान सुरक्षित रखे गये है। इस कारण से भी ये जातियों के लिए नयी राजनैतिक व्यवस्था में स्थान सुरक्षित रखे गये है। इस कारण से भी ये जातियाँ नेतृत्व के क्षेत्र में आगे आ रही है।

व्यक्तिगत नेतृत्व के स्थान पर सामूहिक नेतृत्व का उदय हो रहा है। परम्परागत व्यवस्थाओं में सारे गाँव का एक ही नता होता था और नेतृत्व के वंशानुगत होने के कारण दूसरे लोगों के नेता बनने के अवसर नहीं होते थे, किन्तु वर्तमान में निम्न जातियाँ उच्च जातियों के विरूद्ध संगठित होकर सामूहिक रूप से नेतृत्व प्रदान कर रही है। पंचायती राज द्वारा सत्ता का विकेन्द्रीकरण किये जाने के फलस्वरूप गाँवों में प्रजातंत्रात्मक नेतृत्व का उदय हुआ है। आज नेतृत्व के अवसर किसी धर्म, जाति, व्यवसाय, रंग, लिंग और परिवार तक ही सीमित नहीं है। सभी प्रकार के लोग गाँवों में नेतृत्व के क्षेत्र में दिखाई पड़ते है। आज गाँव से संबंधित निर्माण किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं वरन् पंचायत के सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप से लिये जाते है। इन पंचायतों में विभिन्न वार्डो के कई जातियों के सदस्य होते है।

वर्तमान नवीन परिस्थितियों में शिक्षा का महत्व बढ़ा है। आज ग्रामीण नेता पहले की तरह कम पढ़े–लिखे अथवा अनपढ़ के स्थान पर शिक्षित है। शिक्षित व्यक्ति सरकारी काम–काज को दक्षतापूर्वक कर सकता है। इसलिए अशिक्षितो की तुलना में नेतृत्व का लाभ शिक्षितों को अधिक मिलता है। सरकारी नियमों के अनसार सरपंच के लिए पढ़ा–लिखा होना आवष्यक हो गया है।

ग्रामीण नेतृत्व के क्षेत्र में विशेषीकरण की प्रवृति देखने को मिल रही है। परम्परागत ग्रामीण नेता आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक राजनैतिक सभी क्षेत्रों में अपना प्रभाव रखता था, किन्तु वर्तमान में अलग–अलग क्षत्रों के नेता भी अलग–अलग है। शिक्षा, कृषि, ग्राम विकास, सहकारी संगठन, परिवार नियोजन और महिला कार्यक्रमों के क्षेत्र में अलग–अलग नेता पाये जाते है।

ग्रामीण नेतृत्व में धन का महत्व भी घटा है। प्राचीन नेतृत्व भूस्वामियों, व्यापारियों तथा साहूकारों के हाथ में ही था, किन्तु अब कृषकों, कृषि मजदूरों और कम आय वाले समूहों को भी नेतृत्व का अवसर मिला

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 08, Aug- 2024
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है, यद्यपि परोक्ष रूप से धन का महत्व आज भी बना हुआ है। जहाँ पंचायत स्तर पर कम आय समूह का प्रभुत्व है वहाँ खण्ड एवं जिला परिषद् स्तर पर चुनाव में काफी धन खर्च होने के कारण धनी लोगों का प्रभुत्व है। यह सच है कि ग्रामीण नेतृत्व में जमींदारों का प्रभाव क्षीण हुआ है। साथ ही ग्रामीण नेता के लिए अब विस्तृत परिवार का सदस्य होना आवष्यक नहीं रह गया है।

ग्रामीण नेतृत्व के परिक्षेत्र में सबसे व्यापक परिवर्तन स्त्रियों की भागीदारी माना जाता है। चूँकि परम्परात्मक नेतृत्व पुरूष–प्रधान था, किन्तु अब स्त्रियाँ भी ग्रामीण नेतृत्व में आगे आ रही है। न्याय पंचायत, विकास पंचायत, खण्ड स्तर पर एवं जिला स्तर पर स्त्रियों के लिए 33 प्रतिषत तक स्थान सुरक्षित (बिहार राज्य में पंचायती राज व्यवस्था के तहत महिलाओं को 50 प्रतिषत आरक्षण) कर दिये गए है। परिणामस्वरूप स्त्रियाँ भी ग्रामीण नेतृत्व में आगे आ रही है।

B.N. Singh की महत्वपूर्ण पुस्तक "The Impact of the community development,; Programme on Rural Leadership, Leadership and Political Institutions in India," जो पार्क एवं टिंकर द्वारा सम्पादित है, जिसमें श्री सिंह ने उत्तर प्रदेष में इटावा जिले के नेवारी कला गाँव में ग्रामीण नेतृत्व पर सामुदायिक विकास योजना के प्रभाव का अध्ययन किया। गाँव में चौदह जातियाँ थीं। इनमें ब्राह्मण सबसे अधिक संख्या में थ। गाँव मे जाति का कठोर रूप शिथिल हो रहा था तथा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तन में जाति का कठोर रूप शिथिल हो रहा था तथा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तन में जाति बाधक नहीं थी। गाँव की अधिकांश भूमि ब्राह्मण और राजपूतों के पास चल गयी थी फिर भी उच्च जातियों का गाँव में प्रभाव समाप्त नहीं हुआ। उच्च जातियों की सामाजिक प्रतिष्ठा उँची होने, उनके शिक्षित होने तथा गाँव की अधिकांश भूमि पर स्वामित्व होने के कारण गाँव का नेतृत्व अब भी उनके हाथों में था। गाँव में विकास के कार्य, जैसे गन्दगियों को साफ करने और नालियाँ बनाने, सहकारी संस्थाओं की सदस्यता बढ़ाने, आदि कार्य नवीन नेताओं द्वारा किये जा रहे थे। ये नये नेता युवा तथा उच्च एवं मध्यम आम समूह के थे। गाँव के पुराने और धनवान लोगों का प्रभाव अब शिथिल हो गया था क्योंकि उनकी रूचि विकास कार्यो में नहीं थी। जब भी उनके हितों के विरूद्ध कोई कार्य होता तो वे अपने को विकास कार्यो से पीछे हटा लेते थे। नवीन कानूनी और राजनीतिक परिवर्तनों ने भी उन्हें हतोत्साहित कर दिया था और गाँव वालें अब उन्हें अपना नेता नहीं मानते थे। अब नेतृत्व का क्षेत्र छोटे–छोटे किसानों, पशुपालकों एवं दस्तकारी जातियों के लिए भी खुल गया था। गाँव में जनतंत्रीय नेतृत्व उभर रहा था, जो पंचायती राज, सहकारी संस्थाओं और सामुदायिक विकास कार्यक्रमों की देन था।

प्रो0 योगेन्द्र सिंह ने ग्रामीण नेतृत्व और शक्ति संरचना के नवीन प्रतिमानों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि ग्रामीण नेतृत्व में अब भी उच्च एवं धनवान लोगों का वर्चस्व है। युवा एवं शिक्षित व्यक्ति नेतृत्व के क्षेत्र में आगे आ रहे है। भूमि पर अधिकार अब भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है, क्योंकि भूस्वामी और सम्पत्तिशाली व्यक्ति ही अधिकांशतः शिक्षित होते है और उनके वाह्य लोगों से संबंध होते हैं। नये प्रजातांत्रीय अधिकारों एव कानूनी सुरक्षाओं ने कम शक्तिशाली लोगों को शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है। किन्तु आर्थिक बाधा ने उनकी इच्छा में अवरोध पैदा किया है।

निष्कर्ष

शक्ति के लिए उत्पन्न नये तनाव की समाप्ति इस रूप म होती है कि परम्परागत प्रभुत्वशाली जातियाँ एवं वर्ग अनुकूल तथा उखाड़–पछाड़ के द्वारा सत्ता में किसी न किसी प्रकार से बने रहते हैं। ग्रामीण शक्ति परम्परात्मक नेताओं के हाथ से छूट कर नये लोकप्रिय नेताओं के हाथ में आ रही है। नये ग्रामीण नेताओं ने ग्रामीण की समूह भक्ति (Group Loyalities) का उपयोग करना सीख लिया है। वे अपने दैनिक जीवन में पूर्ण व्यवहारवादी है। वे अपने स्रोतों को जानते है और इतने चतुर हैं कि अपने पद का प्रयोग शक्ति में बने रहने के लिए करते है। अन्त में रंगनाथ के शब्दों में कहा जा सकता है कि " इस प्रकार से ग्रामीण नेतृत्व का उदीयमान प्रतिमान नयी प्रकृति और परम्परात्मक तत्वों का मिश्रित चित्र प्रस्तुत करता है, यद्यपि यह स्पष्ट है कि पुरानी शक्तियाँ एक हारा हुआ युद्ध लड़ रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूचिः–

1. जैन, डॉ. (श्रीमती) राजेश & जैन डाल चन्द्र, 2009, भारतीय राजनीति के नये आयाम, कॉलेज बुक डिपों, जयपुर
2. बघेल, डॉ. डी.एस. & सिंह कर्चुली, डॉ. टी.पी., 2009, राजनैतिक समाजशास्त्र, विवक प्रकाशन, दिल्ली।
3. गुप्ता, प्रो. एम.एल. & शर्मा, डॉ. डी.डी., 2007, भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
4. Chitambar, J.B., Introductory Rural Sociology.
5. Singh, B.N. "The Impact of the community development, "Programme on Rural Leadership" in Leadership and Political Institutions in India. Ed by L. Park and Tinker (1995)
6. Singh, Dr. Y. Modernization of Indian Tradition.
7. Rangnath, Rural Leadership- Old and New, L.P. Vidyrthi, op cit.
8. ए0 आर0 देसाई, भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र।
9. डा0 रवि शंकर जमुआर, भारत में ग्रामीण विकास।
10. लाखा राम चौधरी, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थाएं।
11. रॉबिन शर्मा, नेतृत्व शिखर की डगर।
12. डा0 मृदुला गुप्ता, शैक्षणिक नेतृत्व एवं प्रबंधन।
13. विकास कुमार, पंचायत नेतृत्व का उदीयमान स्वरूप।

❖